गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; मार्च, २०१९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-१, अंक २ □ मार्च, २०१९

अहिंसा एक प्रचंड शस्त्र है। उसमें परम पुरुषार्थ है।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– ....**पृष्ठ**

संपादकीय...

रायचंदभाई...१

कस्तूरबा जीवन-झांकीः समय के दायरे में – *(डॉ. सुदर्शन आयंगार)*..३

आज की समाज रचना – *(डॉ. भवरलालजी जैन)*.....................४

ज्ञान को अनुसंधान की जोड़ देकर गाँवों को सक्षम बनाएं। ५

फाउण्डेशन की गतिविधियां.................................... ६-१२

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

मार्गदर्शक
न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई-मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला।

सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

आखिर कब तक?

कब तक इस विश्व में नफरत का तांडव फैला रहेगा और कब तक हिंसा के इस खौफनाक रूप को पनाह देते रहेंगे। क्या कोई उपाय नहीं है? क्या आने वाली पीढ़ी के लिए ऐसी नफरत और डर के साथ जीने की विरासत सौंपेंगे? जब घर में दो बच्चे झगड़ा करते हैं तो यह नहीं कहते की बदला लेने के लिए दूसरे को मारो, बल्कि उन दोनों को झगड़ा ना करते हुए शांति से रहने के लिए समझाते है। लेकिन बात जब बड़े पैमाने की होती है तब हमारी इस नसीहत का स्वरूप बदल जाता है। छोटे पैमाने पर हम अहिंसा व शांति का अमल करना चाहते है, किंतु बड़े पैमाने पर हम बदला लेना चाहते है, हालांकि यह जानते हुए भी कि शांति व अहिंसा ही आखिरी पर्याय है, फिर भी बदले की भावना का निर्माण??? साहिर लुधियानवी ने क्या खुब कहा है...

''जंग तो खुद ही एक मसला है, जंग क्या मसलों का हल देगी''

पूरे विश्व ने यह कोशिश कर ली है कि हिंसा से बदला लेने से नतीजे मनचाहे नहीं मिलते, सालों से इस बात को साबित कर चुके है। जानते है कि हिंसा की यह कोशिश डराने के लिए ठीक है, किंतु यह बात दोनों पक्षों पर लागू होती है। डरता नहीं हूँ इस भावना से डराता भी नहीं हूँ वहाँ तक पहुँचने की हमारी यात्रा बेहतर व शाश्वत विश्व का निर्माण कर सकती है। अन्यथा, आज हर राष्ट्र अपनी जेब में इस विश्व को नष्ट कर सके ऐसे हिंसक पदार्थ लेकर बैठा है। युद्ध की या हिंसा की स्थिति कभी अच्छी नहीं रही है। इसमें हारने वाला तो रोता ही है, किंतु जीत ने वाला भी रोता है। क्योंकि, कई अपनों को गवाया होता है।

अकसर लोग यह भी सोचते है कि हिंसा या तंगदिली की स्थिति में अहिंसा या शांति की भाषा नहीं चलती, पर सच तो यह है कि हिंसा और तनाव के वातावरण में ही शांति और अहिंसा प्रभावशाली अहिंसक हथियार बनते है, इससे भी अधिक कहें तो यह केवल हिंसा या तनाव के वातावरण में ही नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में असरदार साबित होते है। जिस चीज़ को हिंसा कभी नहीं कर सकती, वही अहिंसात्मक द्वारा सिद्ध की जा सकती है। अहिंसा एक ऐसा रास्ता हैं जिसमे कदम कभी नहीं डगमगाते, अगर हिंसा से ही नतीजे प्राप्त किए जा सकते है तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस क्यों घोषित किया? क्यों विश्व हिंसा दिवस के रूप में आज तक कोई दिन नहीं मनाता है? अहिंसा के आधार पर कार्य करने वाले लोगों को दुनिया प्रोत्साहित करती है, इसमें प्रोत्साहन यह अहिंसा के प्रति श्रद्धा का भाव है। क्या आज तक हिंसा के संबंध में कार्य करने वाले किसी व्यक्ति को किसी भी तरह की सराहना दी गई है? गाँधीजी ने ब्रिटिश सल्तनत के प्रति असहयोग आंदोलन आरंभ किया था। अगर हम यह चाहते हैं कि आनेवाला भविष्य दैवीय बने तो आज विश्व को फिर से एक बार हिंसा के प्रति असहयोग की आवश्यकता है।

इस अंक में 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से अगला प्रकरण, कस्तूरबा की जीवन झांकी, फाउण्डेशन के नए चेअरमैन डॉ. अनिल काकोडकर के द्वारा दिए गए संबोधन को लेख के रूप में प्रस्तुत करते है तथा डॉ. भवरलालजी द्वारा लिखित आज की समाज रचना किताब से अगला लेख तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे है।

इस संपादकीय लेख के विषय में अन्य लोगों के विचारों और उद्देश्यों का सम्मान करता हूँ।

धन्यवाद।

(अश्विन झाला)

'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'

रायचंदभाई

'खोज गाँधीजी की' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। रायचंदभाई से पहली बार मुलाकात हुई उस गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण। **– संपादक**

पिछले प्रकरण में मैंने लिखा था कि बम्बई के बंदर में समुद्र तूफानी था। जून-जुलाई में हिंद महासागर के लिए वह आश्चर्य की बात नहीं मानी जा सकती। अदन से ही समुद्र का यह हाल था। सब लोग बीमार थे, अकेला मैं मौज में था। तूफान देखने के लिए डेक पर खड़ा रहता। भीग भी जाता। सुबह के नाश्ते के समय मुसाफिरों में हम एक या दो ही मौजूद रहते। जई की लपसी हमें रकाबी को गोद में रख कर खानी पड़ती थी, वरना हालत ऐसी थी कि लपसी ही गोद में फैल जाती!

मेरे विचार में बाहर का यह तूफान मेरे अंदर के तूफान के चिह्नरूप था। पर जिस तरह बाहरी तूफान के रहते मैं शांत रह सका, मुझे लगता है कि अंदर के तूफान के लिए भी वही बात कही जा सकती है। जाति का प्रश्न तो था ही। धंधे की चिंता के विषय में भी मैं लिख चुका हूँ। इसके अलावा, सुधारक होने के कारण मैंने मन में कई सुधारों की कल्पना कर रखी थी। उनकी भी चिंता थी। कुछ दूसरी चिंतायें अनसोची उत्पन्न हो गईं।

मैं मां के दर्शनों के लिए अधीर हो रहा था। जब हम घाट पर पहुँचे, मेरे बड़े भाई वहाँ मौजूद ही थे। उन्होंने डॉ. मेहता से और उनके बड़े भाई से पहचान कर ली थी। डॉ. मेहता का आग्रह था कि मैं उनके घर ही ठहरूं, इसलिए मुझे वहीं ले गए। इस प्रकार जो संबंध विलायत में जुड़ा था वह देश में कायम रहा और अधिक दृढ़ बनकर दोनों कुटुंबों में फैल गया।

माता के स्वर्गवास का मुझे कुछ पता न था। घर पहुँचने पर इसकी खबर मुझे दी गई और स्नान कराया गया। मुझे यह खबर विलायत में ही मिल सकती थी, पर आघात को हलका करने के विचार से बम्बई पहुँचने तक मुझे इसकी कोई खबर न देने का निश्चय बड़े भाई ने कर रखा था। मैं अपने दुःख पर पर्दा डालना चाहता हूँ। पिता की मृत्यु से मुझे जो आघात

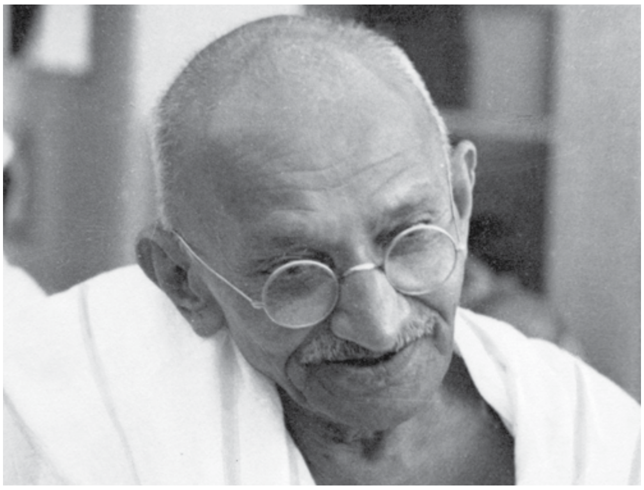

महात्मा गाँधी

रायचंदभाई

पहुँचा था, उसकी तुलना में माता की मृत्यु की खबर से मुझे बहुत अधिक आघात पहुँचा। मेरे बहुतेरे मनोरथ मिट्टी में मिल गए। पर मुझे याद है कि इस मृत्यु के समाचार सुनकर मैं फूट-फूटकर रोया न था। मैं अपने आँसुओं को भी रोक सका था, और मैंने अपना रोज का कामकाज इस तरह शुरू कर दिया था, मानो माता की मृत्यु हुई ही न हो।

डॉ. मेहता ने अपने घर जिन लोगों से मेरा परिचय कराया, उनमें से एक का उल्लेख किए बिना काम चल ही नहीं सकता। उनके भाई रेवाशंकर जगजीवन तो मेरे आजन्म मित्र बन गए। पर मैं जिनकी चर्चा करना चाहता हूँ, वे हैं कवि रायचंद अथवा राजचंद्र। वे डॉक्टर के बड़े भाई के जामाता थे और रेवाशंकर जगजीवन की पेढ़ी के साझी तथा कर्ता-धर्ता थे। उस समय उनकी उमर पचीस साल से अधिक नहीं थी। फिर भी अपनी पहली ही मुलाकात में मैंने यह अनुभव किया था कि वे चरित्रवान और ज्ञानी पुरूष हैं। वे शतावधानी माने जाते थे। डॉ. मेहता ने मुझे शतावधान का नमूना देखने को कहा। मैंने भाषा-ज्ञान का अपना भण्डार खाली कर दिया और कवि ने मेरे कहे हुए शब्दों को उसी क्रम से सुना दिया, जिस क्रम में वे कहे गए थे! उनकी इस शक्ति पर मुझे ईर्ष्या हुई, लेकिन मैं उस पर मुग्ध न हुआ। मुझे मुग्ध करनेवाली वस्तु का परिचय तो बाद में हुआ। वह था उनका व्यापक शास्त्रज्ञान, उनका शुद्ध चारित्र्य और आत्मदर्शन करने का उनका उत्कट उत्साह। बाद में मुझे पता चला कि वे आत्मदर्शन के लिए ही अपना जीवन बिता रहे थे:

हसतां रमतां प्रगट हरि देखुं रे,
मारुं जीव्युं सफल तव लेखुं रे;
मुक्तानन्दनो नाथ विहारी रे,
ओधा जीवनदोरी हमारी रे।

(जब हँसते-खेलते हर काम में मुझे हरि के दर्शन हों तभी मैं अपने जीवन को सफल मानूंगा। मुक्तानन्द कहते हैं, मेरे स्वामी तो भगवान हैं और वे ही मेरे जीवन की डोर हैं।)

मुक्तानन्द का यह वचन उनकी जीभ पर तो था ही, पर वह उनके हृदय में भी अंकित था।

वे स्वयं हजारों का व्यापार करते, हीरे-मोती की परख करते, व्यापार की समस्याएं सुलझाते, पर यह सब उनका विषय न था। उनका विषय-उनका पुरूषार्थ तो था आत्म-परिचय-हरिदर्शन। उनकी गद्दी पर दूसरी कोई चीज हो चाहे न हो, पर कोई न कोई धर्मपुस्तक और डायरी तो

अवश्य रहती थी। व्यापार की बात समाप्त होते ही धर्मपुस्तक खुलती अथवा उनकी डायरी खुलती थी। उनके लेखों का जो संग्रह प्रकाशित हुआ है, उसका अधिकांश इस डायरी से लिया गया है। जो मनुष्य लाखों के लेन-देन की बात करके तुरंत ही आत्मज्ञान की गूढ़ बाते लिखने बैठ जाए, उसकी जाति व्यापारी की नहीं, बल्कि शुद्ध ज्ञानी की है। उनका ऐसा अनभुव मुझे एक बार नहीं, कई बार हुआ था। मैंने कभी उन्हें मूर्च्छा की स्थिति में नहीं पाया। मेरे साथ उनका कोई स्वार्थ नहीं था। मैं उनके बहुत निकट संपर्क में रहा हूँ। उस समय मैं एक भिखारी बारिस्टर था। पर जब भी मैं उनकी दुकान पर पहुँचता, वे मेरे साथ धर्म-चर्चा के सिवा दूसरी कोई बात ही न करते थे। यद्यपि उस समय मैं अपनी दिशा स्पष्ट नहीं कर पाया था; यह भी नहीं कह सकता कि साधारणतः मुझे धर्म-चर्चा में रस था; फिर भी रायचंदभाई की धर्म-चर्चा मैं रुचिपूर्वक सुनता था। उसके बाद मैं अनेक धर्माचार्यों के संपर्क में आया हूँ। मैंने हरएक धर्म के आचार्यों से मिलने का प्रयत्न किया है। पर मुझ पर जो छाप रायचंदभाई ने डाली, वैसी दूसरा कोई न डाल सका। उनके बहुतेरे वचन मेरे हृदय में सीधे ऊतर जाते थे। मैं उनकी बुद्धि का सम्मान करता था। उनकी प्रामाणिकता के लिए भी मेरे मन में उतना ही आदर था। इसलिए मैं जानता था कि वे मुझे जान-बूझकर गलत रास्ते नहीं ले जाएंगे और जो उनके मन में होगा वही कहेंगे। इस कारण अपने आध्यात्मिक संकट के समय मैं उनका आश्रय लिया करता था।

रायचंदभाई के प्रति इतना आदर रखते हुए भी मैं उन्हें धर्मगुरु के रूप में अपने हृदय में स्थान न दे सका। मेरी वह खोज तो आज भी चल रही है।

हिंदू धर्म में गुरुपद को जो महत्त्व प्राप्त है, उसमें मैं विश्वास रखता हूँ। 'गुरु बिन ज्ञान न होय', इस वचन में बहुत-कुछ सच्चाई है। अक्षरज्ञान देनेवाले अपूर्ण शिक्षक से काम चलाया जा सकता है, पर आत्म-दर्शन करानेवाले अपूर्ण शिक्षक से तो चलाया ही नहीं जा सकता। गुरुपद संपूर्ण ज्ञानी को ही दिया जा सकता है। गुरु की खोज में ही सफलता निहित है, क्योंकि शिष्य की योग्यता के अनुसार ही गुरु मिलता है। इसका अर्थ यह है कि योग्यता-प्राप्ति के लिए प्रत्येक साधक को संपूर्ण प्रयत्न करने का अधिकार है, और इस प्रयत्न का फल ईश्वराधीन है।

तात्पर्य यह कि यद्यपि मैं रायचंदभाई को अपने हृदय का स्वामी नहीं बना सका, तो भी मुझे समय-समय पर उनका सहारा किस प्रकार मिला है, इसे अब हम आगे देखेंगे। यहाँ तो इतना कहना काफी होगा कि मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डालनेवाले आधुनिक पुरुष तीन हैं: रायचंदभाई ने अपने सजीव संपर्क से, टॉलस्टॉय ने 'वैकुण्ठ तेरे हृदय में है' नामक अपनी पुस्तक से और रसिकन ने 'अन्टु दिस लास्ट'-सवोदय-नामक पुस्तक से मुझे चकित कर दिया। पर इन प्रसंगों की चर्चा आगे यथास्थान होगी।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.७४-७६

●●●

अहिंसा का रास्ता

अहिंसा संसार के उन महान सिद्धांतों में से है जिसे दुनिया की कोई ताकत मिटा नहीं सकती इसकी सच्चाई प्रमाणित करने के प्रयास में मेरे जैसे हजारों लोग मर जाएं, पर अहिंसा कभी नहीं मरेगी। और अहिंसा का सिद्धांत उस पर आस्था रखकर उसके लिए बलि हो जानेवाले व्यक्तियों द्वारा ही प्रचारित हो सकता है।

अहिंसा उच्चतम आदर्श है। यह वीरों के लिए है, कायरों के लिए कदापि नहीं। औरों की बलि से उठाना और इस भ्रम में रहना कि हम बड़े धार्मिक और अहिंसक है, केवल अपने को धोखा देना है।

आपके पास अहिंसा की तलवार हो तो दुनिया की कोई शक्ति आपको अपनी अधीनता में नहीं ले सकती। यह विजेता और विजित, दोनों का उदात्तीकरण करती है।

इस समय सारी दुनिया में हिंसा की जो लहर आई हुई है, उसका सही कारण यह है कि अभी तक वीर पुरुष की अपराजेय अहिंसा की तकनीक को पूरी तरह खोजा नहीं गया है। अहिंसक ऊर्जा का एक औंस भी कभी बेकार नहीं जाता।

मैं यह नहीं कहता कि भारत पर आक्रमण करनेवाले लुटेरों, चोरों या राष्ट्रों से निपटने के लिए हिंसा का सहारा मत लो। लेकिन इससे अच्छी तरह कामयाब होने के लिए हमें अपने ऊपर संयम रखना सीखना चाहिए। जरा-जरा-सी बात पर पिस्तौल उठा लेना मजबूती नहीं, बल्कि कमजोरी की निशानी है। आपसी घूंसेबाजी हिंसा का नहीं, बल्कि नामर्दगी का अभ्यास है।

यद्यपि हर प्रकार की हिंसा बुरी है और सिद्धांततः उसकी निंदा की जानी चाहिए पर अहिंसा में विश्वास करनेवाले व्यक्ति को आक्रामक और रक्षक के बीच भेद करने की अनुमति है, बल्कि यह उसका कर्तव्य भी है। ऐसा करने के उपरांत उसे अहिंसक तरीके से रक्षक का पक्ष लेना चाहिए अर्थात उसकी रक्षा करने में अपनी जान दे देनी चाहिए। उसके बीच पड़ने से संभवत: द्वंद्व की स्थिति जल्दी समाप्त हो जाएगी और यह भी हो सकता है कि लड़ाकू पक्षों के बीच शांति स्थापित हो जाए।

मेरी अहिंसा तरह-तरह की हिंसाओं-रक्षक हिंसा और आक्रामक हिंसा-के-बीच भेद मानती है। यह सही है कि दीर्घ काल में यह भेद मिट जाता है, पर आरंभिक अच्छाई फिर भी कायम रहती है। अहिंसक व्यक्ति, समय आने पर, यह जरूर कहेगा कि किसका पक्ष न्यायोचित है और किसका नहीं। इसीलिए मैंने अबीसीनियाइयों, स्पेनियों, चैकों, चीनियों और पोलैंडवासियों की सफलता की कामना की थी, हालांकि मेरी अभिलाषा थी कि इनमें से प्रत्येक को अहिंसक प्रतिरोध का आश्रय लेना चाहिए था।

यदि युद्ध स्वयं एक अनैतिक कृत्य है तो यह नैतिक समर्थन या आशीर्वाद के योग्य कैसे माना जा सकता है? मैं सभी प्रकार के युद्धों को पूरी तरह गलत मानता हूँ। लेकिन हम दो युद्धरत पक्षों के इरादों की छानबीन करें तो संभवत: यह पाएंगे कि उनमें से एक सही है और दूसरा गलत। उदाहरण के लिए, यदि अ देश ब देश पर कब्जा करना चाहता है तो स्पष्टतया यह ब देश पर अन्याय है। दोनों देश सशस्त्र संघर्ष करेंगे। मैं हिंसक संघर्ष में विश्वास नहीं करता, फिर भी ब देश जिसका पक्ष न्यायोचित है, मेरी नैतिक सहायता और आशीर्वाद का पात्र होगा।

यदि आपमें अहिंसा के मार्ग पर चलने की बहादुरी नहीं है तो आप घूंसे का जवाब घूंसे से दे सकते हैं। लेकिन हिंसा के प्रयोग की भी एक नैतिक संहिता है। अन्यथा, हिंसा की लपटें उन्हीं को जलाकर राख कर देंगी जो उन्हें सुलगाएंगे। मुझे परवाह नहीं अगर वे सभी नष्ट हो जाएं। पर मैं भारत की आजादी को विनष्ट होते नहीं देख सकता।

- 'महात्मा गाँधी के विचार' से साभार, पृष्ठ क्र. १३८-१३९

कस्तूरबा जीवन-झांकी: समय के दायरे में

बा-बापू १५० के अवसर पर फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य डॉ. सुदर्शन आयंगार के द्वारा कस्तूरबा की जीवन-झांकी तैयार की गई है। इस प्रयास में तीन अधिकृत दस्तावेजों का आधार लिया गया है। उनमें गाँधीजी की दिनवारी, संपूर्ण गाँधी वाङ्मय तथा अरुण गाँधी द्वारा लिखी गई Kasturba - A Life का समावेश होता है। उपरोक्त स्रोतों का उपयोग कर हमने बा की दिनवारी को हिंदी में लोगों के बीच रखने का प्रयास किया है। हम 'खोज गाँधीजी की' में कस्तूरबा की दिनवारी को क्रमशः प्रस्तुत कर रहे है। – ***संपादक***

१९१९ – राजकोट से बा वापस आईं और बीमार गाँधीजी की तीमारदारी में लग गईं। पेशिच की वजह से उन्हें बवासीर हो गया था और वे मुंबई जाकर इंग्लिश उपचार के लिए राज़ी हुए थे। वहाँ डॉक्टर दलाल ने कहा कि गाँधीजी अगर दूध लेंगे तो ही तबीयत ठीक से संभलेगी और ताकत आने पर ही ऑपरेशन संभव होगा। उन्होंने गाय का दूध लेना छोड रखा था। परंतु उनकी मुसाफरी तो चल ही रही थी। बा और गाँधीजी दोनों मुंबई में थे जब दूध की सलाह मिली। बा ने गाँधीजी से कहा कि तुमने गाय का दूध नहीं लेने का तय किया तो तबीयत की खातिर बकरी का दूध ले लो। गाँधीजी ने यह सलाह मान ली और उनकी तबीयत वाकई में बेहतर हुई। यह बात ८ जनवरी की है।

बा ने बेटे हरिलाल से कहा था कि गुलाब के जाने बाद बच्चों की परवरिश वही आश्रम में रखकर करेगी। जब गाँधीजी को लेकर मुंबई जाना हुआ तो हरिलाल के बच्चे भी मुंबई मणिभवन में ही जाकर रहे और बा ने सभी का ध्यान रखा। अप्रैल के एक दिन गाँधीजी को विचार कौंध गया कि असहकार ही उपाय है। हिंदुस्तान बंद का ऐलान दिया गया जो सफल रहा और वहीं से १९२०-२१ के असहकार आंदोलन की शुरूआत हुई। बा बच्चों को लेकर साबरमती आश्रम लौट आईं और स्थिर हुईं।

१९२०-२३ – बा ने देख लिया कि उनके पति फिर बडी दृढता से एक नई लडाई में जुड गए हैं और वे राष्ट्रीय नेता बन चुके हैं। बा ने मगनलाल गाँधी के साथ साबरमती आश्रम की बागडोर संभाल ली। गाँधीजी अब तक बापू हो चुके थे। आश्रम सत्याग्रहियों के तालीम का केंद्र था और हर आश्रमवासी बापू की सत्याग्रह स्कूल का विद्यार्थी था और बा उनकी गृहमाता बन गईं और हर छोटी से छोटी चीज़ का ध्यान रखने लगी। इसी समय बा ने कताई सीखी और आश्रम की बेहतरीन कतीनों में एक बन कर औरों को सिखाने लग गईं।

१० मार्च १९२२ बापू को हिरासत में लिया गया और उन पर देशद्रोह का जगप्रसिद्ध मुकदमा चला। उन्हें छः साल की सजा हुई। बा एक दम परिपक्व हो चुकी थीं। उन्होंने यंग इन्डिया २३ मार्च १९२२ के अंक में यह अपील लिखवाई कि उनके पति की गिरफ्तारी और जेल ने यह पैगाम दिया है कि समय रहते हर देशवासी को जग जाना है और कोंग्रेस के बताये हुए रचनात्मक कामों को हाथ पर लेना ज़रूरी हो गया है। हर मर्द-औरत को चाहिए कि वे विदेशी कपडें त्याग दें और खादी अपन लें; हर एक औरत सूत कताई कर सूत की पैदावार बढा दे, और हर व्यापारी विदेशी सामान की तिजारत बंद कर दे।

कस्तूरबा गाँधी

हरिलाल पुनः विवाह करना चाहते थे, परंतु बा और बापू दोनों ही इसके पक्ष में नहीं थे। परंतु जून १९२२ को जब हरिलाल भी जेल से छूट कर बापू से मिलने यरवडा जेल पहुँचे तो उन्होंने फिर शादी की बात छेडी। बापू ने कहा कि अगर कोई बच्चों वाली विधवा मिले और हरिलाल जवाबदारी उठाना चाहें तो वे सोच सकते है। कुछ महीनो बाद बा जब हरिलाल के चार बच्चों को लेकर कलकत्ता पहुँची तो हरिलाल ने पिता की बात मां से कही तो बा राजी हो गई और कहा कि हाँ बापू का विचार एकदम सही था। बात आई गई हो गई। वापस आकर बा साबरमती आश्रम के कामों में फिर से रचबस गई।

१९२० के अरसे में एक महत्वपूर्ण घटना हुई। प्यारेलाल, जो बाद में गाँधीजी के सचिव रहे और जिन्होंने गाँधीजी की एक बडी ही आधिकारिक जीवनी लिखी, अपनी पढाई खत्म कर के तुरंत लाहौर से साबरमती आश्रम आ गए। उन्हें बापू के साथ रहकर ही काम करने की इच्छा हो गई थी। बापू ने उन्हें परिक्षण के लिए रख लिया। लाहौर से उनकी मां ने पत्र लिखकर बहुत नाराज़गी जताई। बापू ने उन्हें बातचीत के लिए आश्रम बुला लिया। वे आईं और उनकी पहली लंबी बातचीत बा से हुई। बा ने उनकी सारी बातें हमदर्दी के साथ सुनी और उन्हें यह बताया कि प्यारेलाल तो फिर भी पराया लडका है, बापू ने अपनी पत्नी यानि बा और बेटों को भी इस राह पर लाने के लिए बहुत मुश्किलों मे डाला था। परंतु बापू की राह सही थी और प्यारेलाल देश का अच्छा और सच्चा भक्त बनेगा। प्यारेलाल आश्रम में टिके और बहुत बडा काम किया उसका मुख्य श्रेय बा को भी जाता है।

इन पांच सालों में बा साबरमती आश्रम में ही रहीं और मगनलाल गाँधी जो संचालक थे उनके बाद आश्रमवासियों का ख्याल बा ही ने रखा और अनुशासन बरकरार रखने में अहम भूमिका निभाई।

१३ जनवरी १९२४ को पूणे की ससून अस्पताल से मुख्य सर्जन का तार आया कि बापू का इमर्जन्सी में अपेन्डिक्स का ऑपरेशन किया गया और वे ठीक हैं। बा जा नहीं पाईं, क्योंकि आश्रम की जवाबदारी का एहसास रहा। छोटे पुत्र देवदास को भेजा। तबीयत अच्छी नहीं हुई, अंग्रेज़ सरकार ने ५ फरवरी को उन्हें बिना किसी शरत छोड दिया। मई के अंत में आश्रम आए और बा उनसे मिल पाईं।

क्रमशः

आज की समाज रचना

६५ उम्र के सभी जनप्रतिनिधि स्वयं निवृत्त हो जाएं

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'पुनर्विचार हेतु सहायक पार्श्वभूमि' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

डॉ. भवरलालजी जैन

विधायकों और सांसदों को अन्य कोई भी ऐसा पद न दिया जाए जो उन्हें लाभ पहुँचाता हो। विधानसभा या संसद में लगे किसी गंभीर आरोप को कानून के दायरे में लाया जाए। साथ ही विधानसभा या संसद के जनप्रतिनिधियों का ऐसा व्यवहार चल जाएगा। इस प्रकार के विशेषाधिकारों को तुरंत समाप्त कर दिया जाना चाहिए। हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने ऐसा निर्णय दिया कि,विधायकों व सांसदों ने यदि किसी विशेष पक्ष को वोट देने के लिए रिश्वत ली तो भी आज के विद्यमान कानूनों के अनुसार उन पर मुकदमा दायर नहीं किया जा सकता है। विधान मंडल में वोट देने का अधिकार उनका मौलिक अधिकार है। इसे उनका विशेषाधिकार भी माना जा सकता है । इसलिए उन्होंने वोट किसे और क्यों दिया, इसकी जाँच नहीं की जा सकती है। कानून के अजीब प्रावधानों के कारण ही जिन्होंने रिश्वत दी, उन पर मुकदमा दायर नहीं हो सकता है और जिसने रिश्वत ली, उस पर मुकदमा दायर नहीं हो सकता है। भ्रष्टाचार को यदि कानूनी रूप न देना हो तो ऐसे विशेषाधिकारों को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। जनप्रतिनिधियों को मिलने वाली सुख सुविधाओं के लिए कानूनी और बाध्यकारी प्रावधान नहीं होने चाहिए।

जनप्रतिनिधियों को मिलने वाले अधिकार और राजशाही ठाट-बाट अंग्रेजी साम्राज्य का स्मरण कराने वाला अत्यंत घृणास्पद प्रावधान है। सत्ता शक्ति का नंगा प्रदर्शन, अहंकार, ठाट-बाट, शेखी,डींग जनप्रतिनिधियों को शोभा नहीं देता है। अपने स्तर, और शान का प्रदर्शन आम जनता की स्वतंत्रता को ही चुनौती देता प्रतीत होता है। इससे उनको राजा-प्रजा के अंतर का अनुभव होता है। स्वयं अपने लिए सुविधाएँ देने अथवा लेने के विषय में कम से कम एक व्यवस्थित और औचित्यपूर्ण आचार संहिता होनी चाहिए। विधायकों और सांसदों को स्थानीय क्षेत्र-विकास-योजना के अंतर्गत मिलने वाला धन ग्राम पंचायतों के खाते में जाना चाहिए।

ऐसा होने से जनप्रतिनिधियों की अपने पदों के प्रति आसक्ति, अहंकार, सुरक्षा-व्यवस्था आदि में उल्लेखनीय कमी आएगी। जनप्रतिनिधियों, राजनेताओं और नौकरशाहों को प्राप्त सुरक्षा कवच कम हो जाने से इन तीनों के कारण पैदा हुए संबंधित समीकरणों को मिलने वाली सुरक्षा भी स्वयं ही कम हो जाएगी। इन घटकों और वर्गों की सुरक्षा व्यवस्था में कमी होने से समाज के सत्यनिष्ठ नागरिकों की हीन-भावना भी समाप्त हो जाएगी। जिससे वे खुले वातावरण का अनुभव कर समाज के सर्वांगीण विकास में सहयोग दे सकेंगे। इससे इन पदों के प्रति आकर्षण में भी कमी होगी।

स्वतंत्रता से सुरक्षा भली, जैसे विचारों के कारण अधिकांश सरकारी अधिकारी और कुछ जनप्रतिनिधि प्रशासन में कार्यरत हैं। उन्हें काम की अपेक्षा जोड़-तोड़, जुगाड़; नवनिर्मिति और पूर्वस्थिति से भी अधिक कल्पना शून्यता प्रिय होती है। सरल और ढुल-मुल निर्णय लेकर वे अपने बचाव की नीति अपनाते हैं। सरकार में विद्यमान सर्वव्यापी सुरक्षा से ऐसा प्रतीत होता है कि समाज विनाश की ओर जा रहा है। समाज-रचना में संस्थाओं या उनके घटकों को अनावश्यक बल देना, उन्हें सहलाना, दुलारना या उनकी जड़ें जमने देना किसी भी सिद्धांत के अनुकूल और युक्तिसंगत नहीं है। किसी विशेष समय या विशिष्ट घटना के अवसर पर ऐसा प्रबंध करना पड़ा हो तो उसे भविष्य में कालातीत, कामचलाऊ और अस्थायी ही समझना चाहिए। बेंजामिन डिजरेली के कथनानुसार – संरक्षण न केवल मृत है अपितु शापित भी है।

सरकार संस्था का निर्माण समाज में सुरक्षा और संरक्षण की भावना के संवर्धन के लिए किया गया था। किंतु वर्तमान स्थिति में उसके विकराल स्वरूप के कारण उसकी सुरक्षा ही खतरे में पड़ गई है। उस संबंध में ई.बी. व्हाईट के ये मार्मिक विचार है-मैं समझता हूँ कि जब सुरक्षा व्यवस्था से सुरक्षा मशीनरी में फैलाव होता है। सच्चे अर्थों में समाज की सुरक्षा उसके विकास, सुधार क्षमता या तत्कालीन परिवर्तनों पर ही अवलंबित होती है। अनुचित असंगत सुरक्षा सरकार और समाज के लिए घातक होती है। समाज की प्रगति में वह बाधक बन जाती है। अत: उसे नियंत्रित करना आवश्यक है।

सुरक्षा व्यवस्था की तरह गोपनीयता भी प्रशासनिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण एवं लुभावना अंग है। भारतीय शासकीय गोपनीय कानून (इंडियन ऑफिशियल सिक्रेट्स एक्ट) १९२३ से प्रभावी है। जब अंग्रेजों ने यह कानून बनाया था उस समय उनका उद्देश्य यह था कि, उनका साम्राज्य, निष्कंटक चलता रहे और भारतीय जनता गुलाम बनी रहे। इस कानून में आज तक कोई परिवर्तन नहीं किया गया। देश की संप्रभुता, एकता और सुरक्षा जिन कारणों से भंग हो सकती है ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए यह कानून प्रभावी किया गया है। परंतु मूल उद्देश्यों को छोड़ कर इस कानून के प्रावधानों का उपयोग सरकारी अधिकारी अपनी आवश्यकताओं के अनुसार वांछित तथ्यों को गुप्त रखने के लिए करते हैं। केवल आम आदमी को ही नहीं,अपितु चयनित प्रतिनिधियों को भी इस कानून की आड़ में कोई सरकारी जानकारी नहीं दी जाती है। बजट को संसद पटल पर रखे जाने से पूर्व इस कानून के अंतर्गत उसे गोपनीय माना जाता है। किंतु उसे प्रकट करने वालों को देशद्रोही मान कर उनके विरूद्ध कभी कोई कार्रवाई की गई हो ऐसा दिखाई नहीं देता है। ढुलमुल पद्धति से कानूनों का उपयोग आज के सामाजिक जीवन की दिनचर्या बन गई है।

क्रमश:

ज्ञान को अनुसंधान की जोड़ देकर गाँवों को सक्षम बनाएं।

– डॉ. अनिल काकोडकर

डॉ. अनिल काकोडकर

फाउण्डेशन के नए चेअरमैन पद्मभूषण डॉ. अनिल काकोडकर ने २६ फरवरी २०१९ को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं को संबोधित किया था, यह घटना गतिविधि का भाग बन सकती है, किंतु जिस तरह से डॉ. काकोडकर ने अपनी बात रखी है वह लेख में देने योग्य सामग्री है। इस प्रस्तुति से गाँधी विचार के क्षेत्र में कार्य करने वाले कई कार्यकर्ताओं को एवं संस्थाओं को बल प्राप्त होगा। **– संपादक**

आप सभी एक मूलभूत और महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में जुटे हुए है। मैं अपने आप में एक बड़ी कमी महसूस करता हूँ, हालांकि मैं गाँधीयन परिवार से तो हूँ ही, बचपन से संबंध रहा है। मैंने ४० से अधिक साल विज्ञान के क्षेत्र में बिताया है। जो कुछ हमारे देश और दुनिया में चल रहा है उस हिसाब से अगर गाँधी विचार धारा के अनुरूप चलते तो क्या होता? ऐसे तुलनात्मक विचार मेरे मन में हमेशा आते रहे। दो बात मेरे विचार में ज्यादा अहमियत रखती है वह यह कि हमने टेक्नोलॉजी खुब विकसती की है, पर ऐसी कौन सी टेक्नोलॉजी है जो केवल भारत में विकसित हुई है? विश्व में जो टेक्नोलॉजी उपस्थित है उससे हटकर और प्रभावी टेक्नोलॉजी हमारे पास है तो उससे राष्ट्र को बल मिलता है। जब में इस सवाल को खोजने का प्रयास करता हूँ की ऐसी कौन सी टेक्नोलॉजी है हमारे पास तो इसका उत्तर मैं नहीं दे पाता हूँ। असलियत यह है कि हम लोग अनुकरण करने में ज्यादा विश्वास करते है और अपनी सोच से आगे बढ़ने में कम विश्वास करते हैं। यह केवल विज्ञान या तकनीक के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह बात करीब करीब हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में है। तब मुझे स्वतंत्र सोच का महत्त्व अधिक समझ में आने लगा।

दूसरी बात हमारी शिक्षा है, नई सोच के लिए शिक्षा हमें प्रवृत्त करती है यह बात बिलकुल ठीक है। फिर भी हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी है कि उसमें जब कोई कहे तब हम काम करते है, इसमें हमारी खुद की सोच या पहल के आधार पर कितना आगे बढ़ते है। काम करते है किंतु कोई कहे तभी करना है यह परतंत्रता का संकेत है। स्वतंत्रता के बाद इतने दशक गुजर गए है उस दौरान गरीबी की परिभाषा बदली है, गाँव की परिभाषा बदली है, इतनी प्रगति हुई है हमारे देश में। इसके साथ साथ समाज में विषमता भी बहुत बढ़ रही है। हम चाहे कितनी भी समृद्धि हासिल कर ले पर समाज में विषमता रही तो वह समाज कभी सुखी नहीं हो सकता। मेरा गाँधी विचार के प्रति फिर से सोचने का जो शिलशिला शुरू हुआ है इसका मूल कारण यही है। सेवा निवृत्त होने के बाद मैंने यह ठान ली की मैं तीन बातों में अपना समय व्यतीत करूंगा, उसमें १. ऊर्जा, २. शिक्षा और ३. ग्रामीण विकास। यह तीन बाते बहुत मूलभूत है और मुझे लगा मैं इन तीन बातों में कुछ कर सकता हूँ।

मैं ऐसा भी मानता हूँ, की ग्रामीण भाग में शिक्षा और आजीविका के द्वारा हर एक व्यक्ति को सक्षम बनाकर अपनी आर्थिक आवश्यकता को निभा सके उस स्थिति में लाना चाहिए। खेती तो करते हैं, अगर सुधारीत खेती करें, नई नई तकनीकों का प्रयोग करें तो किसान की आमदनी बढ़ती है। यह हम सब जानते है।, लेकिन उस तकनीक में बदलाव करते है तो यह स्थायी रूप से निरंतर चलती है। इसके लिए हमें अनुसंधान व विकास (Research and Development) में अधिक जोर देने की आवश्यकता है। जब हम ज्ञान के साथ अनुसंधान की जोड़ देंगे और उसी दृष्टि से गाँवों का विकास करते है तो इसमें आजीविका, ज्ञान एवं अनुसंधान आधारित टेक्नोलॉजी का संकलित रुप से प्रयोग करना अनिवार्य बन जाता है। मेरा ऐसा मानना है कि ग्राम विकास के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं में वैश्विक स्तर की श्रेष्ठता होना अत्यंत आवश्यक है साथ साथ वह कार्य स्थानीक स्तर पर होना चाहिए। लोगों के साथ सतत संपर्क हो उनके साथ मिल जुलकर हल ढूंढने का कार्य हो तो इस तरह का वातावरण, इस तरह की परिस्थितिगत तंत्र शाश्वत विकास के लिए बहुत आवश्यक है। हम सब मानवीय अभिगम के आधार पर जुड़े है तो यह सब मानव को केंद्र में रखते हुए होना चाहिए इसमें ग्राम विकास का अभिगम द्वितीय, किंतु अंतिम जन या अंत्योदय, जिसमें गरीब से गरीब और कमजोर से कमजोर व्यक्ति प्राथमिक रुप में होनी चाहिए। अगर ऐसा किया जाए तभी सामाजिक विषमता दूर होगी। हो सकता है इसमें समय लगेगा, पर इसे अपनाने के बाद जो निर्माण होगा वह शाश्वत होगा।

गाँधीजी के समय में जो परिस्थिति थी उसके अनुरूप भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता दिलाने का प्रयास तो निश्चित रूप में किया ही था, किंतु एक समृद्ध राष्ट्र बनाने की जो सोच थी उसमें अंत्योदय को ध्यान में भी रखा गया था। आज अगर इस संदर्भ को देखें तो हर एक व्यक्ति को अपनी आजीविका निर्माण करने के मौके मिलने चाहिए, उनकी काबिलीयत को निखारना है उस हिसाब से प्रशिक्षण देना है। यह सब करते करते पर्यावरण आधारित उच्च मानवीय मूल्यों का निर्माण करना है। गाँधीजी ने जो प्रयास किए है उनमें हरिजन सेवा संघ, गौ सेवा संघ, चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ और यह सब मिलाकर सर्व सेव संघ का निर्माण हुआ। इसमें एक भारतीय संस्कृति का असली रूप और उसकी जोड़ थी साथ ही साथ उसमें एक बहुत बड़ा सामाजिक व आर्थिक आयाम भी अंतर्भूत था। मुझे लगता है कि गाँधीजी का जो विचार था उसके पीछे उनकी जो धारणा थी वह तत्त्वज्ञान आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, प्रासंगिक है। जैसे उन्होंने चरखा लोगों के सामने लाया और इन आयामों को सार्थक किया। चरखा एक साधन था आज उनकी प्रासंगिकता को खोजनी है तो चरखा जैसा आज क्या साधन या मॉडेल हो सकता है जिससे उतना ही परिवर्तन हासिल किया जा सकता है, उसे खोजने की आवश्यकता है।

बा-बापू १५० बड़ा कार्यक्रम है। अगर हम एक नया मॉडेल देने में सफल होते है जो मापनीय (Scalable), स्वचालनीय (Self-sustainable) और संकलित (Integrated) हो तो यह एक अच्छा प्रयास होगा।

• • •

हरि झंडी दिखाकर पदयात्रा का आरंभ करते हुए प्रो. मार्क लिंडले तथा मोराणकर जी

ग्राम स्वराज्य पदयात्रा – २०१९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशनने बा–बापू १५० के अंतर्गत महात्मा गाँधीजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में ग्राम स्वराज्य पदयात्रा का कार्यान्वयन जलगाँव जिला के चोपडा तहसील के आदिवासी क्षेत्र में किया गया। ३० जनवरी से ६ फरवरी २०१९ तक आयोजित इस पदयात्रा में बोरअजंटी, शेनपाणी, गौर्यापाडा और वैजापूर गाँवों का समावेश किया गया था।

हमारे गाँवों का निर्माण करने के लिए लोगों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाना अनिवार्य है, समग्रता के आधार पर हर गतिविधि को कार्यान्वित करते है तो वह संकलित विकास की परिभाषा में बैठते है। ऐसा ही प्रयास फाउण्डेशन के द्वारा बा–बापू १५० के अंतर्गत किया जा रहा है। यह पदयात्रा इसका ही एक भाग है। पदयात्रा के दौरान उक्त गाँवों में स्वच्छता, संस्कार, संगठन के मूल्यों को दीप्तिमान करने का प्रयास किया गया। गाँव–गाँव में किसानों, महिलाओं और युवाओं के छोटे छोटे समूह बनाकर क्या बदलाव प्राप्त कर सकते है इस विषय पर प्रकाश डाला गया। अधिकांश गाँवों में महिलाओं के संगठन बनाकर आजीविका आधारित गतिविधियों से आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में प्रयास किया गया। इस दौरान गाँव के भौगोलिक स्थिति के आधार पर बारिश का पानी संरक्षित करने हेतु लोक भागीदारी आधारित विभिन्न तरह के वॉटरशेड कार्यक्रम कि दिशा भी तय की गई।

३० जनवरी को सुबह ९.३० बजे चोपड़ा के गाँधी चौक में उप–वनक्षेत्र अधिकारी मोराणकर के हाथों गाँधीजी के पुतले को सूती माला पहनाई गई। उनके साथ अमेरिका के प्रो. डॉ. मार्क लिंडले, मोराणकर तथा फाउण्डेशन के समन्वयक उदय महाजन ने हरि झंडी दिखाकर पदयात्रा को प्रस्थान किया। इस अवसर पर फाउण्डेशन के डेविड जेबराज, अश्विन झाला, सुधीर पाटील, चोपडा समाज कार्य महाविद्यालय के अध्यापक वृंद, छात्र तथा स्थानीय नगरजन उपस्थित थे। आठ दिन चले इस यात्रा में ४ गाँवों का समावेश किया गया था हर एक गाँव में २ दिन का निवास था। इस दो दिन के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रमों को आयोजित किया गया।

विद्यालय में किए गए कार्यों: विद्यालयों में मोहन से महात्मा चित्र प्रदर्शनी, छात्रों के साथ गाँधीजी के प्रेरक प्रसंग एवं विभिन्न खेल व गीतों के माध्यम से मूल्य वर्धन करने का प्रयास किया।

पदयात्रा में सम्मिलित फाउण्डेशन के कार्यकर्ता तथा समाज कार्य महाविद्यालय, चोपड़ा के विद्यार्थी गण

रंगोली स्पर्धा का निरीक्षण करते सुधीर पाटील, सागर चौधरी

मोहल्ला बैठक के दौरान परिवारों से मुलाकात

ग्राम स्वच्छता अभियान: हर एक गाँव में दूसरे दिन सुबह लोक सहभाग से सुबह ७.०० से ८.३० गाँव की मुख्य गलियाँ, ग्राम पंचायत परिसर, शाला परिसर की सफाई, पानी के पंप व पानी के निकाल की व्यवस्था को ठीक तरह से साफ किया जाता था। स्वच्छता कार्यक्रम के माध्यम से हमारा गाँव के लोगों के साथ एक घनिष्ठ रिश्ता बन जाता था।

मोहल्ला बैठक: नए गाँव में पहुँचने के बाद, कार्यकर्ताओं के तीन समूह बनाकर मोहल्ला बैठक के लिए जाते थे। इस बैठक में संगठन का महत्त्व व महिलाओं के छोटे-छोटे समूह बनाने का प्रयास किया गया। यह प्रक्रिया असरकारक रही, क्योंकि इस संवाद से लोगों के साथ सीधे संपर्क में आते थे जिससे पदयात्रा उद्देश्य एवं दो दिन के दौरान होने वाली गतिविधि के बारे में बताते थे, साथ साथ बचत गुट में जुड़ने की उनकी रुची के आधार पर इन चार गाँवों में महिला, युवा व किसानों के गुट बनाने की प्रक्रिया का आरंभ हुआ।

मोतियाबिंद जांच शिविर: आरोग्य विषय के साथ कार्य करने वाली हमारी टीम के सदस्य मोतियाबिंद जांच शिविर के आयोजन में लग जाते थे। पहले दिन इस शिविर के बारे में लोगों को जानकारी दी जाती थी और दूसरे दिन कांताई नेत्रालय अस्पताल के चिकित्सा विशेषज्ञ उपस्थित रहकर बुजुर्ग व्यक्तियों की आंखों की जांच करते थे। इन दिनों के दौरान चार गाँव के करीब १९१ लोगों की जांच की गई और २० लोगों को आगे के शल्यक्रिया के लिए कांताई नेत्रालय भेजा गया।

व्यसन मुक्ति कार्यक्रम: आज कल सभी आयु के लोगों में व्यसन की आदत बढ़ रही है। फाउण्डेशन ने बा-बापू १५० के अंतर्गत नशाबंदी को अहम मुद्दा बनाकर गाँव-गाँव में जन जागृति और तम्बाकू निषेध कार्यक्रम किए जा रहे है। पदयात्रा के इन चार गाँवों में धूम्रपान नियंत्रण समिति के पोस्टर तथा इससे संबंधित डॉक्यूमेंटरी भी दिखाई गई। खास तौर पर व्यसन आरोग्य, आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरण के संदर्भ में कितने घातक बन सकते है इस विषय को प्राधान्य देकर लोगों के साथ संवाद किया जाता था। इस कार्य में जिला आरोग्य केंद्र जलगाँव के डॉ. नितीन भारती तथा वैजापूर प्राथमिक आरोग्य केंद्र के डॉ. वसंत जाधव ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

रंगोली प्रतियोगिता: दोपहर के समय लडकियों और महिलाओं के लिए स्वच्छता विषय पर रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी। उनके भीतर की कलात्मकता और नेतृत्व को बढ़ावा देने के साथ स्वच्छता के संदेश को समुदाय में स्थापित करने के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उत्कृष्ट रंगोली बनाने वाली बहनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाता था। इस यात्रा के दौरान करीब सौ से अधिक महिलाओं ने इसमें हिस्सा लिया था।

सांस्कृतिक कार्यक्रम: सभी गाँवों में सायं समय पर सामुदायिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह था कि लोगों के सामने पदयात्रा के उद्देश्य प्रस्तुत कर सके, जन जागृति के लिए नाटक अच्छा माध्यम है इससे संदेश दिया जा सके तथा गाँव के बच्चों में छिपे हुनर को एक खुला मंच मिलता था जिससे बच्चे अपनी प्रतिभा को निखार सके। इस सायं कार्यक्रम में अधिकतर ग्रामस्थ उपस्थित रहकर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेते थे।

समापन कार्यक्रम: ६ फरवरी २०१९ को वैजापूर वन विभाग विश्राम गृह परिसर आयोजित समापन कार्यक्रम में वन परिक्षेत्र अधिकारी एम. बी. पाटील, यशदा के मास्टर ट्रेनर सुनिल आहिरराव, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर प्राथमिक शाला के बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया, फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सागर चौधरी ने ग्राम स्वराज्य पदयात्रा तथा बा-बापू १५० कार्यक्रम की भूमिका के बारे में बताया। एम. बी. पाटील ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि गाँधी विचारधारा के माध्यम से समाज में बदलाव लाया जा सकता है, शर्त यही है कि उनको आज के संदर्भ में समझने का प्रयास करें। जल, जंगल, जमीन यह निसर्ग की श्रृंखला को हमने हमारे अतिरेक उपभोग के कारण नष्ट करने की कगार पर लेकर आए है। हम सभी ने मिलकर इसको बचाना ही होगा। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ता चांदनी, वैशाली, धनश्री, गणेश और प्रशांत ने अपने पदयात्रा के अनुभव बताए। समापन कार्यक्रम का सूत्र संचालन राजेंद्र जाधव ने किया। ♦♦♦

महात्मा गाँधी के रोचक संस्मरण के द्वारा बच्चों में मूल्य संवर्धन का प्रयास

मोतीयाबिंद शिविर

स्वस्थ समुदाय का निर्माण करना हमारी प्राथमिक जरूरत है, इसलिए बा-बापू १५० के अंतर्गत छ मुद्दों में ग्रामीण आरोग्य का भी समावेश किया गया है। आरोग्य में आँख प्राथमिक है इसके आधार पर हम अपना जीवन सरलता से चला सकते है। बुजुर्ग वर्ग में आँख की रोशनी के संबंधित किए शिकायतें रहती है, और वे अपना इलाज करवाने के लिए दूसरे पर निर्भर रहते है। हालांकि बहुत बार ऐसा भी होता है वे जांच के लिए अस्पताल तक पहुंचते भी नहीं है। ऐसे कई निरीक्षण के आधार पर फाउण्डेशन ने कांताई नेत्रालय के साथ मिलकर मोतियाबिंद शिविर का कार्यक्रम बनाया।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत गाँव में विशेष चिकित्सकों की टीम के द्वारा आंखों की जांच की जाती है। ऐसा ही एक शिविर ११ जनवरी २०१९ में खर्ची खुर्द और रवंजा बुद्रुक में संपन्न हुआ। इस शिविर में उक्त दोनों गाँवों में करीब ९९ मरीजों की जांच की गई, उनमें से ७ लोगों के निशुल्क आपरेशन के लिए कांताई नेत्रालय ले जाया गया। इस कार्य में शिविर संयोजक चंद्रकांत चौधरी, आशुतोष कुमठेकर तथा प्रशांत सूर्यवंशी ने अपना योगदान प्रदान किया। ♦♦♦

मोतियाबिंद शिविर का दृश्य

'प्यारे पिताजी आप व्यसन का त्याग करें...,' बच्चों ने लिखे दिल पिघला देने वाले खत

हमारे देश में सबसे बड़ी समस्या में व्यसन अग्रस्थान पर आता है, व्यसन के लिए लोग जितना खर्च करते है उतना तो हमारा राष्ट्रीय विकास का बजट भी नहीं होता है, इससे हासिल क्या होता है केवल और केवल व्यसन करने वाले परिवार की बरबादी। हालांकि व्यसन नियंत्रित करने के लिए कई सारे कार्यक्रम चलाए जाते हैं पर सफलता का स्तर बहुत ही नीचा है। लोगों को व्यसन के इस शिकंजे से छुड़ाने के लिए क्या कोई उपाय है?

इस संदर्भ में फाउण्डेशन ने एक सार्थक प्रयास करने की कोशिश की है। व्यसन में एक तरकीब निश्चित ही कार्य करती है, वह है पारिवारिक भावना। एक पिता पर उनके बेटे और बेटी की असर अधिक होती है, अगर उनके पुत्र या पुत्री इस विषय पर पिताजी से संवाद करें तो स्वाभाविक रूप से नतीजा सकारात्मक मिल सकता है। एक ऐसा ही अनोखा कार्यक्रम खर्ची खुर्द प्राथमिक शाला में ४ फरवरी २०१९ को किया गया। प्राथमिक शाला में पढ़ने वाले बच्चों ने अपने पिताजी को खत लिखे, इस खत में करुणा से भरे शब्दों के माध्यम से व्यसन से होने वाले नुकसान का जिक्र किया गया, और कहा कि हम आपको खोना नहीं चाहते आपका साया हमें अविरत मिलता रहे यही हमारी अभिलाषा है। क्या आप अपने लाडले पुत्र और पुत्री की बात नहीं मानेंगे? क्या आप चाहते हैं हम भी आपके मार्ग पर चले? तो कृपया आप इस व्यसन का त्याग करें और हमें प्यार करें। इस तरह से लिखे खत की गाँव वालों ने काफी सराहना की है, तुरंत असर के अंतर्गत अब तक करीब ४ परिवार के ६ लोगों ने व्यसन का त्याग कर दिया है। बा-बापू १५० के अंतर्गत यह अभियान असरकारक रूप से आगे बढ़ रहा है। ♦♦♦

कर्क रोग जन जागृति शिविर

आरोग्य विषयक कार्यक्रम के अंतर्गत खर्ची बुद्रुक गाँव में कैंसर जन जागृति शिविर का आयोजन किया गया। जलगाँव शहर के कैंसर विशेषज्ञ डॉ. निलेश चांडक ने ग्रामजनों के समक्ष कैंसर के संदर्भ में फैली भ्रामक मान्यता को वैज्ञानिक जानकारी देकर दूर करने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त कैंसर से संबंधित जानकारी देने वाले चित्रों के जरिए उनके प्रारंभिक लक्षण को कैसे जान सकते है इस विषय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई। तम्बाकू सेवन ही कैंसर का प्रमुख कारण है इस बात को ग्रामस्थों के समाने प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारे बच्चों का सुनिश्चित भविष्य चाहते हैं तो हमें व्यसन को हमारे जीवन से दूर करना होगा। इस कार्यक्रम में करीबन २०० ग्रामस्थ उपस्थित थे, उसमें ६० प्रतिशत महिलाएं थी। महिलाओं संबंधोति करते हुए डॉ. चांडक ने स्तन कैंसर से संबंधित जानकारी के द्वारा महिलाओं के द्वारा पूछे जाने वाले सवालों का सटीक जवाब प्रस्तुत किया तथा २० महिलाओं की प्राथमिक जांच भी की गई।

कर्क रोग जन जागृति शिविर की पहल

इस कार्यक्रम में गाँव के सरपंच, फाउण्डेशन के मेजर डेविड जेबराज, डॉ. गीता धरमपाल, विनोद रापतवार, तथा अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सुधीर पाटील ने बा-बापू १५० के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यक्रमों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। ♦♦♦

फाउण्डेशन के संचालक मंडल की बैठक के दौरान विचार-विमर्श

पद्मभूषण डॉ. अनिल काकोडकर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के चेयरमैन पद पर नियुक्त

जिस उद्देश्य के आधार पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की स्थापना की गई है, उनमें डॉ. भवरलालजी जैन तथा न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी का प्रयास मुख्य रहा। उनके द्वारा स्थापित इस नींव को वे बहुत कम समय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले गए। समय और कालचक्र ने हम से उनका छाया छिन लिया। न्या. धर्माधिकारी इस फाउण्डेशन के पहले चेअरमैन रहे है, उनके निधन के बाद २६ फरवरी २०१९ के दिन संचालक मंडल की पहली बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में संचालक मंडल के सदस्यों ने न्या. धर्माधिकारी जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी प्रतिमा को माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर उनके जीवन के विभिन्न पहलू को श्रीमान अशोक जैन ने, डॉ. अनिल काकोडकर ने, डॉ. सुदर्शन आयंगार एवं अनिल जैन ने साझा किए।

इस बैठक में नए चेअरमैन का चयन करना था, फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन ने डॉ. अनिल काकोडकर के नाम का सुझाव दिया, इस सुझाव को डॉ. सुदर्शन आयंगार ने अनुमोदन दिया। संचालक मंडल ने भारतीय अणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष, डॉ. अनिल काकोडकर को चेअरमैन के रूप में सर्व सम्मति से चयन किया। मंडल के वरिष्ठ सदस्य सेवादास दलिचंद ओसवाल ने सूती माला पहनाकर डॉ. काकोडकर का नए पद के लिए स्वागत किया।

चयन के बाद धन्यवाद अदा करते हुए डॉ. काकोडकर ने कहा कि यह मेरे लिए अभिभूत करने वाली बात है। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन में आने से मुझे अलग आनंद की अनुभूति होती है, मुझे इस कार्य में रुची है। मुझे सचमुच ऐसा महसूस हुआ की गाँधी विचारधारा को उनकी समग्रता के आधार पर सझकर ही इस तरह की भूमिका निभा सकते हैं। बड़े भाऊ और धर्माधिकारी जी की गाँधी विचार की एक अद्वितीय विरासत छोड़कर गए है, उनको आगे ले जाना इतना सरल नहीं है यह नई जिम्मेदारी महत्त्वपूर्ण है। इसे हम सब सामूहिक रूप से आगे बढाएंगे।

डॉ. अनिल काकोडकर आरंभ से ही फाउण्डेशन की सलाहकार समिति तथा बाद में संचालक मंडल के सदस्य रहे है, इस आधार पर फाउण्डेशन की गतिविधियों से वाकिफ है। डॉ. काकोडकर का विज्ञान के क्षेत्र में एक प्रखर अनुभव है, इस अनुभव के आधार पर सामुदायिक

डॉ. अनिल काकोडकर का चेअरमैन के रूप में चयन कर सत्कार करते दलिचंद ओसवाल

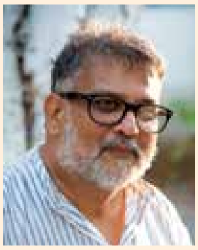

तुषार गाँधी

विकास के क्षेत्र में अपनी अनोखी शैली से विभिन्न संकल्पनाओं का निर्माण भी किया है। आपके ज्ञान व अनुभव के द्वारा फाउण्डेशन गाँधी विचार के नए आयामों का विस्तार करता रहेगा।

संचालक मंडल में एक नए सदस्य का समावेश करना था। इस नाम के लिए संचालक मंडल ने महात्मा गाँधी के प्रपौत्र श्रीमान तुषार गाँधी के नाम का चयन किया। तुषारभाई ने गाँधीजी के जीवन-दर्शन पर प्रभावशाली रूप से कई कार्य को अंजाम दिया है। फाउण्डेशन के आरंभ काल से ही आपका मार्गदर्शन मिलता रहा है, गाँधी तीर्थ उद्घाटन के दौरान आपने कहा था कि शाश्वत प्रकाश को प्रज्वलित रखने में गाँधी तीर्थ अहम भूमिका निभायेगा। आपके शब्द को सार्थक स्वरूप देने के लिए संचालक मंडल अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता रहेगा। गाँधी विचार के क्षेत्र में आपका गहन अध्ययन रहा है, युवा पीढ़ी को बापू के विचारों से ज्ञात करने में आपका ज्ञान व अनुभव अनमोल बना रहेगा।

फाउण्डेशन का संचालक मंडल, सलाहकार मंडल तथा सहकारी वृंद इस दो महत्त्वपूर्ण चयन को लेकर हर्ष विभोर है। ♦♦♦

मूल्य शिक्षा से बच्चों का समूचा विकास

हमारी शिक्षा बच्चों को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाली होनी चाहिए। बा-बापू १५० के अंतर्गत मूल्य शिक्षा पर विभिन्न तरह के कार्य का अमल किया जा रहा है। इस संदर्भ में प्राथमिक शाला के तथा उच्च प्राथमिक शाला के पहली से आठवीं कक्षा तक के बच्चों के साथ मूल्य शिक्षण के पाठ जैसे खेल, गीत, श्रम, समूह भावना, पर्यावरण शिक्षा आदि के लिए बच्चों को प्रेरित किया जा रहा है। हर महीने आने वाले उत्सव, महत्वपूर्ण दिन मनाना, व्यक्तिगत स्वच्छता से विद्यालय स्वच्छता, प्लास्टिक मुक्त शाला, पानी का सुयोग्य उपयोग, भोजन पश्चात कम पानी से अपनी थाली खुद साफ करना जैसे कार्यों को प्राथमिकता दी गई है। वर्तमान में खर्ची खुर्द, शेरी, जलके, दापोरा, रामदेववाडी गाँव में इस अभियान का आरंभ किया गया है। ♦♦♦

अकादमिक कौंसिल की बैठक का ब्यौरा

फरवरी ३, २०१९ को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की अकादमिक कौंसिल की बैठक गाँधी तीर्थ पर संपन्न हुई। बैठक में प्रो. टी. करुणाकरण अध्यक्ष के रूप में थे। प्रो. एम. पी. मथाई, भरत महोदय, प्रो. विश्वास पाटील, फाउण्डेशन की ओर से अंबिका जैन, प्रो. गीता धरमपाल, डॉ. जॉन चेल्लदुरै, उदय महाजन तथा अश्विन झाला उपस्थित थे। इस बैठक में निम्न पहलुओं पर विचार-विमर्श हुआ।

१. समाज कार्य स्नातकोत्तर डिप्लोमा अभ्यासक्रम के स्वरूप को बदकर अधिक प्रभावी रूप में प्रस्तुत करना है।

२. संघर्ष परिवर्तन पर प्रादेशिक कार्यशालाएं, नेशनल गाँधीयन लीडरशिप कैंप एवं अहिंसा व शांति विषय पर विन्टर स्कूल जैसे कार्यक्रम का सुझाव प्रस्तुत किया।

३. पद्मश्री डॉ. भवरलाल जैन के नाम से एक वार्षिक व्याख्यान माला।

४. बा-बापू १५० के अवसर पर वर्ष २०१९-२० में एक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन।

५. गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में हर साल एक लाख नए छात्रों तक पहुँचने का सुझाव।

६. छात्र इन्टर्नशिप एवं रिसर्च फेलोशिप के विषय में विभिन्न प्रारूप का निर्माण करें।

अकादमिक कौंसिल द्वारा प्रस्तुत उक्त मुद्दों को फाउण्डेश के संचालक मंडल के समक्ष प्रस्तुत कर उनकी राय के आधार पर कार्यांवित किए जाएंगे। ♦♦♦

शांति विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम

बा-बापू १५० के अंतर्गत गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, इन्डिया पीस सेन्टर, नागपूर तथा प्रयत्न संस्था, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में ६ से ८ फरवरी २०१९ को शांति शिक्षा प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई थी। बिहार के मुजफ्फरपुर में कार्यांवित इस कार्यशाला में शांति के विभिन्न पहलू, जाती, धर्म आधारित संघर्ष, संघर्ष निवारण की प्रक्रिया तथा सहजीवी शांति के विभिन्न आयामों को रोचक पद्धति से प्रस्तुत किया गया। इस प्रस्तुतीकरण में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के डॉ. जॉन चेल्लदुरै, अश्विन झाला, इन्डिया पीस सेन्टर के कास्टा दीप, प्रयत्न संस्था के प्रभात कुमार तथा वरिष्ठ गाँधीवादी सुरेन्द्र कुमार जी ने अपना योगदान दिया। मुजफ्फपुर की विभिन्न महाविद्यालयों के करीब ३५ छात्र-छात्राएं इसमें उपस्थित थे। ♦♦♦

महादेवभाई नाटक का मंचन

महादेवभाई नाटक की प्रस्तुति

गाँधी पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर फाउण्डेशन द्वारा हर साल बापू को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम किए जाते है। वर्ष २०१९ में गाँधीजी की पुण्यतिथि पर महादेवभाई नाटक आयोजित किया गया था। गाँधीजी के सचिव महादेवभाई देसाई के जीवन वृतांत को दर्शाता इस नाटक में उनकी की शिक्षा, संघर्ष, गाँधीजी के साथ उनकी पहली मुलाकात से लेकर उनके साथ बिताए पच्चीस सालों की यात्रा को संवेदन रूप से दर्शाया है। गाँधीजी के जीवन व कार्य के साथ महादेवभाई एकरूप हो गए थे। यहाँ तक की आज विश्व में गाँधीजी पर जितना भी साहित्य है उस साहित्य में महादेवभाई का योगदान अतूलनिय रहा है। महादेवभाई द्वारा लिखित डायरियां गाँधीजी के जीवन के विभिन्न पहलू को उजागर करते है। ऐसी व्यक्ति राष्ट्र के लिए एक रत्न से कम नहीं है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान अतुलनीय रहा, उनके चरित्र की कहानी राष्ट्र कभी नहीं भूल सकता।

उनके योगदान का स्मरण करने के उद्देश्य से ओम फाउण्डेशन द्वारा निर्मित तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा प्रायोजित मराठी नाटक महादेवभाई को जलगाँव के गंधे सभागृह में २९ जनवरी के दिन प्रस्तुत किया गया।

इस कार्यक्रम के आरंभ में फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन, जैन फार्म फ्रेश के संचालक सुनिल देशपांडे, महादेवभाई नाटक के निदेशक रमेश भोले तथा फाउण्डेशन के डॉ. जॉन चेल्लादुरै, गीता धरमपाल के द्वारा दीप प्रज्वलन कर महात्मा गाँधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस कार्यक्रम में बड़ी मात्रा में दर्शक उपस्थित थे। ♦♦♦

नाटक की प्रस्तुतिकरण का आनंद लेते हुए श्रीमान अशोक जैन, सुनिल देशपांडे व दर्शक

संस्कार रूपी मुहिम में सम्मिलित राष्ट्र के भावि नागरिक

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा – २०१८–१९

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा द्वारा भावी पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक बनाने के प्रयास में शाश्वत मूल्यों का सिंचन किया जाता है। संस्कार सिंचन की इस धारा को फाउण्डेशन द्वारा हर साल भारत के विभिन्न प्रदेशों की विद्यालय एवं महाविद्यालय में आयोजित किया जाता है। वर्ष २००७ से अब तक इस कार्यक्रम में करीब पंद्रह लाख से अधिक छात्र–छात्राएं सम्मिलित हुए है। वर्ष २०१८–१९ की बात करें तो इस साल महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान इन पांच राज्यों के २४८० विद्यालय व महाविद्यालय से करीब ३,३५,०९२ छात्र एवं शिक्षक समूह सम्मिलित हुए है। अब तक एक समय पर बैठे छात्रों की संख्या में यह सर्वश्रेष्ठ संख्या है।

इस परीक्षा में जलगाँव जिले के जिलाधिकारी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, महापालिका आयुक्त तथा शिक्षाधिकारी ने भी सहभाग लेकर समाज में एक नया आदर्श प्रस्तुत किया। इन परीक्षाओं में सहभागी छात्रों को प्रेरणा मिले इसलिए विभिन्न जगहों पर जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

महाराष्ट्र: ७ जनवरी से ७ फरवरी तक चले इस कार्यक्रम में श्री शिवाजी महाविद्यालय, अमरावती, डॉ. कृष्णदास जाजू ग्रामीण सेवा महाविद्यालय, वर्धा; कन्या विद्यालय, पांढरकवडा; श्री तुलजाभवानी सैनिक विद्यालय, तुलजापूर; महात्मा गाँधी पब्लिक स्कूल, बोरामणी, सोलापूर; न्यू कॉलेज, कोल्हापूर; डी. बी. जे. कॉलेज, चिपलुण, रत्नागिरी एवं चं. बा. तुपे साधना हाइस्कूल, हडपसर, पुणे इन विद्यालयों व महाविद्यालयों में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किए गए है।

गुजरात: १० से १५ फरवरी के दौरान लोकनिकेतन विनय मंदिर, रतनपूर–पालनपुर; सी. सी. योगांजली विद्यालय, सिद्धपुर, पाटण; एम. जी. पटेल सैनिक स्कूल फॉर गर्ल्स, खेरवा, मेहसाणा; उत्तर बुनियादी विद्यालय, डोलिया, सुरेन्द्रनगर एवं उत्तर बुनियादी विद्यालय, डाकोर, खेडा में इस परीक्षा का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कर्नाटक: १९ से २५ फरवरी – कस्तुरबा गाँधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, अरसीकेरे जि. हसन तथा विमेन्स फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, रामनगर में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस परीक्षा में सम्मिलित छात्रों के पास से केवल किताब का मूल्य प्राप्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त होने वाला खर्च जैसे परिपत्रक, पत्राचार, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न आदि फाउण्डेशन के द्वारा किया जाता है। इस कार्यक्रम के लिए फाउण्डेशन ने वर्ष २०१६–१७ में संकाय निधि प्राप्त किया था। इस निधि से प्राप्त व्याज की रकम से वर्ष २०१८–१९ में सत्तर हजार छात्र जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है ऐसे परिवारों के बच्चों को निशुल्क समावेश किया गया है। उपरोक्त कार्यक्रम बा–बापू १५० के अंतर्गत गाँधीजी और कस्तूरबा को अर्पित करते है। ♦♦♦

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र समूह

पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में सम्मिलित छात्राओं का सम्मान करते फाउण्डेशन के भुजंगराव बोबडे

महात्मा को नमन इस प्रदर्शनी की रोचक गाथा का आनंद लेते हुए अतिथि गण

गाँधी-दर्शन नामक विशेष प्रदर्शनी का आरंभ

गाँधीजी की पुण्यतिथि पर फाउण्डेशन द्वारा विशेष कार्यक्रम की श्रृंखला का आरंभ किया गया है। गाँधीजी के विभिन्न पहलू के आधार पर निर्मित गाँधी-दर्शन प्रदर्शनी के अंतर्गत पहली श्रृंखला 'महात्मा को नमन' ३० जनवरी २०१९ के दिन जलगाँव स्थित गाँधी उद्यान में प्रस्तुत की गई। इस प्रदर्शनी में महात्मा गाँधी की अंतिम यात्रा की झलकियां एवं उनके रोचक तथ्यों के साथ महानुभावों द्वारा दी गई श्रद्धांजलियां प्रस्तुत की गई थी। इस प्रदर्शनी को ३० जनवरी से ५ फरवरी २०१९ तक गाँधी उद्यान तथा ६ से १० फरवरी तक भाऊ के उद्यान में प्रस्तुत की गई। जलगाँव के शहरीजन एवं मीडिया के कई समूहों ने इस प्रदर्शनी का लाभ उठाया। उद्घाटन कार्यक्रम में फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य सेवादास दलिचंद ओसवाल, ज्योति जैन, पुलिस अधिक्षक दत्तात्रय शिंदे, अंबिका जैन आदी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता भुजंगराव बोबड़े द्वारा लिखित किताब का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन अश्विन झाला ने किया।

महात्मा के विभिन्न पहलू को जानने के प्रयास में व्यस्त दर्शक

बा-बापू १५० के अंतर्गत फाउण्डेशन द्वारा गाँधीजी के जीवन व कार्य आधारित विशेष प्रदर्शनी का आयोजन भविष्य में भी किया जाएगा। ♦♦♦

डॉ. भवरलाल जैन पर मराठी साहित्य सम्मेलन

२४ फरवरी २०१९ को सूर्योदय सर्वसमावेशक मंडल जलगाँव द्वारा अष्टपैलू पद्मश्री डॉ. भवरलाल जैन एक दिवसीय मराठी साहित्य सम्मेलन का आयोजन जलगाँव के कांताई सभागृह में किया गया था। इस सम्मेलन में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक तथा जैन इरिगेशन सिस्टम्स ली. के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. भवरलाल जैन (बड़े भाऊ) के जीवन के विभिन्न पहलू को प्रस्तुत किया गया। बड़े भाऊ ने अपने जीवन के दौरान कई क्षेत्रों में अपना योगदान अर्पित किया है। शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व, पानी, कृषि, साहित्य सृष्टि, सामाजिक उद्योजक तथा गाँधी विचार में भाऊ का चिंतन जैसे कई विषयों पर विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का निर्माण यह बड़े भाऊ के जीवन का स्वप्न था, और उन्होंने भलीभाँति उसे पूरा किया। भाऊ के जीवन में गाँधी विचार केंद्र में था इसी की बदौलत उन्होंने अपने व्यवसाय को ट्रस्टीशिप का रूप दिया। इस सम्मेलन में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता अश्विन झाला ने भाऊ के विचार में गाँधी विषय को प्रस्तुत किया। सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में मराठी साहित्य के विद्वान डॉ. किशोर सानप उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल करने में सतीश जैन ने जहमत उठाई। ♦♦♦

रचनात्मक कार्यकर्ता की बिदाई

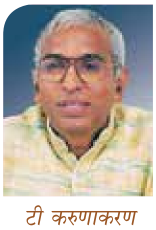

टी करुणाकरण

गाँधीवादी चिंतक और ग्रामीण विकास विशेषज्ञ डॉ. टी. करुणाकरण सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर बेहद सक्रिय रहे हैं। डॉ. करुणाकरण ने विभिन्न अनुसंधान और अकादमिक पदों पर अपनी भूमिका निभाते हुए देश के प्रमुख ४ आई. आई. टी. में अपनी सेवाएं दी है। डॉ. टी. करुणाकरण गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के सलाहकार समिति के एवं अकादमिक कौंसिल के सदस्य थे। आपका फाउण्डेशन परिवार के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। डॉ. भवरलालजी जैन के साथ आपकी मुलाकातें गाँधी विचाराधारित रचनात्मक कार्य कि दिशा में अग्रगामी बनी रही। डॉ. करुणाकरण का १२ मार्च २०१९ को मुंबई में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया है। एक प्रखर रचनात्मक कार्यकर्ता हमारे बीच से बिदाई ले चूका है, फाउण्डेशन परिवार उनके प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है और ईश्वर से यह प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को चिर शांति में अवस्थित कर उनके परिवारजनों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ♦♦♦

पाठकों के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत – **संपादक**

खोज गाँधीजी की में परम पूजनीय महात्मा गाँधीजी की खोज हम जैसे सामान्य व्यक्तियों के लिए जो बहुसंख्य मात्रा में हजारों सालों से तमोनिद्रा में निद्रित है, बहुत प्रेरणादायी एवं पवित्र जल से सिंचित करनेवाली बन रही है। आपके सम्पादकीय ज्ञानबिन्दु जो गाँधीरुपी गंगाजल से निकल रहे है वह वाचकों को हमेशा उल्हसित करते रहेंगे।

सौ. सुप्रिया देशमुख, *मुंबई*

....

आपकी पत्रिका में जो सामग्री आज तक आई उससे गाँधीजी के बारे में मुझे समृद्ध बनाया।

कालिदास मराठे, *गोवा*

....

संपादक जी, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित खोज गाँधीजी की यह पत्रिका मुझे नियमित रूप से प्राप्त होती है और यह पूरा श्रेय आपको जाता है। मैं इस अंक का नियमित पाठक हूँ। इससे गाँधीजी के बारे में बहुत ही अच्छी और नई जानकारी मुझे प्राप्त होती है।

जयवंतराव ठाकरे, *धुलिया*

♦♦♦

संग्रहालय के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय देखने आए हुए अतिथीयों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ अभिमत – **संपादक**

महात्मा गाँधीजी के तरह सपूर्ण विश्व में वसुदेव कुटुंबकम की भावना रहे इस मार्ग पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन प्रयत्न कर रहे है इस के लिए प्रार्थना एवं शुभेच्छा।

विनोद निमकाले, *अकोला*

....

बहुत ही सुन्दर, प्रेरणादायक एवं आत्मचिन्तन के लिये, सीखने एवं करने के लिये।

राजेंद्रकुमार पटणी, *बुंदी*

....

After visiting this great and memorable museum, I realize the greatness of Gandhi and his life. He is a unique example of freedom fighters; the consistency between his words and work is the key to his success, a great learning for any person or country. Wish to visit this museum once more in the future.

Warm regard from Afghanistan

Mohammad Mustafa Musawer, *Afghanistan*

♦♦♦

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

मेहूल इंदाणी, जीएसटी कमिश्नर
०१.०२.२०१९

एम. के. श्रीवास्तव, जनरल मॅनेजर, नाबार्ड
०२.०२.२०१९

किशोरराजे निंबालकर, जिलाधिकारी
०३.०२.२०१९

ॲग्री इंडस के छात्र, वर्धा
०३.०२.२०१९

मेहमद और अय्यिलदीझ, ॲग्रीकल्चर इंजिनिअर्स, तुर्की
१०.०२.२०१९

डॉ. नितीन मयूर, अमेरिका तथा राजा मयूर, जलगाँव
१३.०२.२०१९

शेखर चरेगाँवकर, कराड
२०.०२.२०१९

डॉ. किशोर सानप, नागपूर
२३.०२.२०१९

RNI Title Code:- MAHBIL10001

चित्रशृंखला-२३

गाँधी-बोस

महात्मा गाँधी हरीपुरा काँग्रेस के अध्यक्ष नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार पटेल के साथ हरीपुरा काँग्रेस की सभा में, फरवरी, १९३८।

It is true that Subhas Babu is an ex-Rashtrapati of the Congress twice elected in succession. He has a record of great sacrifice to his credit. He is a leader born. Subhas Babu has laid out his plan of battle with deliberateness and boldness. He thinks that his way is the best. He honestly thinks that the Working Committee's way is wrong, and that nothing good will come out of its ''procrastination''. He told me in the friendliest manner that he would do what the Working Committee had failed to do. He was impatient of delay. I told him that, if at the end of his plan there was swaraj during my lifetime, mine would be the first telegram of congratulation he would receive.

- Mahatma Gandhi

यह सच है कि सुभाष बाबू काँग्रेस के एक भूतपूर्व राष्ट्रपति हैं और लगातार दो बार इस पदपर चुने गये। उन्होंने देश के लिए महान त्याग-बलिदान किया है। वे एक जन्मजात नेता है। सुभाषबाबू ने अपनी लड़ाई की योजना काफी सोच समझकर और हिम्मत के साथ सामने रखी है। वे मानते हैं कि उनका तरीका सबसे अच्छा है। वे ईमानदारी के साथ मानते हैं कि कार्य-समिति का रास्ता गलत है, और उसकी दीर्घसूत्रता से कोई लाभ नहीं होनेवाला है। उन्होंने मुझ से बड़ी आत्मीयता से कहाँ कि जो कुछ कार्य समिती नहीं कर पाई, वे वह सब कर के दिखा देंगे। वे विलम्ब से ऊब चुके थे। मैंने उनसे कहाँ कि अगर आपकी योजना के फलस्वरुप मेरे जीवन-काल में स्वराज्य मिल गया तो आपको बधाई का सबसे पहला तार मेरी ओर से ही मिलेगा।

- महात्मा गाँधी

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला।

प्रकाशन: २५ फरवरी २०१९

प्रेषित : २ मार्च २०१९